तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम : परम्परागत व आधुनिक

Methods of studiying Comparative Politics
Traditional and modern

परम्परागत उपागम → अरस्तू को ही परम्परागत दृष्टिकोण का जनक माना जाता है। तुलनात्मक अध्ययन के परम्परागत दृष्टिकोण के अवशेष अरस्तू से पहले भी पाए जाते हैं। लेकिन अरस्तू ने तुलनात्मक अध्ययन को सुव्यवस्थित किया। ये तुलनात्मक राजनीति विश्लेषण के परम्परागत उपागमों मे ऐतिहासिक उपागम कानूनी, औपचारिक उपागम तीनों का अध्ययन शामिल है।

ऐतिहासिक उपागम → ऐतिहासिक उपागम के अन्तर्गत भिन्न भिन्न राज्यों की शासन प्रणालियों के ऐतिहासिक विवरण तैयार करके उसकी तुलना करते हैं। और यह पता लगाते है कि हमे अपने वर्तमान लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तथा संभावित त्रुटियों के निवारण के लिए कौन - कौन से उपाय करने चाहिए। ऐतिहासिक उपागम के प्रतिपादक निकोलो माण्टेस्क्यू, बेजहॉट व सर हेनरी मेन है। ऐतिहासिक सामग्री का संकलन करते समय हमारा ध्यान केवल शासक वर्ग की गतिविधि तक सीमित नहीं रहना चाहिए। बल्कि तत्कालिन सामाजिक - आर्थिक परिस्थिति सांस्कृतिक चेतना के स्तर, जनसाधारण की भावनाओं और आन्दोलनो के बारे पूरा विवर[ण] अवश्य तैयार करना चाहिए।

आधुनिक दृष्टिकोण

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद परम्परागत दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप जो विश्लेषण निरीक्षण तथा परीक्षण की नवीन पद्धति विकसित हुई इसे उन्ही को आधुनिक उपागम कहा गया, आधुनिक उपागम में तुलनात्मक अध्ययन में राजनीतिक संस्थाओं के साथ - साथ और राजनीतिक समूहों, दबाव समूहों, राजनीतिक दलों के व्यवहार, मतदान व्यवहार लोकमत आदि के अध्ययन को भी शामिल किया गया।